

**ना धूप से डरूं,**

**ना धूल से हारूं,  
हर नज़र को मैं संवारूं।  
बिन कहे ही तुम्हें मिला,  
पर सही समय पर सामने खिला।**

**न काँच हूँ, न कोई परछाई,  
फिर भी आँखों की मैं हूँ सच्चाई।  
तेज़ निगाहों का हूँ पहरेदार,  
बताओ कौन? जो हर दम है तैयार?**